बैंकों की रिजर्व मात्रा को प्रभावित कर, मुद्रा पूर्ति को निर्धारित करता है। केन्द्रीय बैंक के निर्देशानुसार, व्यापारिक बैंक को अपनी सावधि एवं मांग जमा का एक निश्चित अनुपात नकद के रूप में रखना पड़ता है। इसका निर्धारण न्यूनतम नकद अनुपात एवं जमाओं के स्तर से होता है। उदाहरण के लिए, यदि जमा राशि एक करोड़ रुपया है तथा न्यूनतम नकद अनुपात 20 प्रतिशत है तो आवश्यक रिजर्व 20 लाख रुपए होगा। जहां तक मुद्रा की पूर्ति का प्रश्न है, इसका निर्धारण अतिरेक रिजर्व (Excess Reserve) द्वारा होता है। कुल रिजर्व की मात्रा एवं आवश्यक रिजर्व की मात्रा में जो अन्तर है, उसे अतिरेक रिजर्व की मात्रा कहते हैं। उपर्युक्त उदाहरण में कुल रिजर्व एक करोड़ रुपया है तथा आवश्यक रिजर्व 20 लाख रुपए है तो अतिरेक रिजर्व की मात्रा 80 लाख होगी। यदि आवश्यक रिजर्व की मात्रा कम हो जाए तो अतिरेक रिजर्व की मात्रा बढ़ जाती है जिसका मुद्रा पूर्ति पर प्रभाव पड़ता है अर्थात् ऐसी स्थिति में व्यापारिक बैंक अतिरेक रिजर्व की मात्रा के बराबर ऋण दे सकता है।

(3) **लोगों की नकद राशि एवं जमा रखने की इच्छा**—मुद्रा की पूर्ति इस बात पर निर्भर रहती है कि लोग बैंकों में अपनी जमा राशि के किस अनुपात में, अपने पास नकद राशि रखना चाहते हैं। यदि लोग अपने पास नकद कम रखते हैं तथा बैंकों में जमा राशि अधिक रखते हैं तो मुद्रा की पूर्ति अधिक होगी इसका कारण यह है कि अधिक जमा राशि के आधार पर बैंक अधिक मुद्रा का निर्माण कर सकते हैं।

(4) **उच्च शक्ति मुद्रा** (High Powered Money)—मुद्रा पूर्ति को निर्धारित करने वाले जिन तीन कारणों का ऊपर विवेचन किया गया है, उनमें बाद के दो कारणों को उच्च शक्ति मुद्रा कहा जाता है। इन कारणों को संयुक्त रूप से मौद्रिक आधार के अन्तर्गत शामिल किया जाता है। व्यापारिक बैंकों के पास जो रिजर्व की मात्रा होती है और लोगों के पास सिक्के और नोटों के रूप में जो चलन की मात्रा होती है, इन दोनों के योग को उच्च शक्ति मुद्रा कहा जाता है। इसी के आधार पर बैंक जमाओं का विस्तार किया जाता है एवं मुद्रा का निर्माण किया जाता है जिसमें मुद्रा की पूर्ति बढ़ती है। मुद्रा की पूर्ति एवं उच्च शक्ति मुद्रा में सीधा सम्बन्ध होता है अर्थात् उच्च शक्ति मुद्रा के बढ़ने से मुद्रा की पूर्ति बढ़ती है एवं उसके घटने से मुद्रा की पूर्ति घटती है। इसका विस्तृत विवेचन आगे किया गया है।

(5) **मुद्रा के चलन वेग का मुद्रा की पूर्ति पर प्रभाव**—एक निश्चित अवधि में मुद्रा की एक इकाई का जितनी बार भुगतान करने के लिए प्रयोग किया जाता है, उसे मुद्रा का चलन वेग (Velocity of Money) कहते हैं। मुद्रा के चलन वेग का भी मुद्रा की पूर्ति पर वही प्रभाव पड़ता है जो मुद्रा की मात्रा के बढ़ाने का होता है। उदाहरण के लिए, यदि एक दस रुपए का नोट एक दिन में दस बार विनिमय का कार्य करता है, तो वह सौ रुपए के बराबर कार्य करता है अतः मुद्रा की पूर्ति में 10 रुपए के स्थान पर 100 रुपए गिनी जानी चाहिए, किन्तु यहां एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि मुद्रा की पूर्ति को निकालते समय हम मुद्रा की प्रत्येक इकाई का चलन वेग नहीं लेते वरन् मुद्रा की औसत चलन वेग को लिया जाता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मुद्रा की कुल पूर्ति पर मुद्रा के कुल चलन वेग का भी प्रभाव पड़ता है।

मुद्रा स्टॉक और मुद्रा प्रवाह
(MONEY STOCK AND FLOW OF MONEY)

किसी एक समय के बिन्दु पर अर्थव्यवस्था में चलन की जो मात्रा होती है, उसे मुद्रा का स्टॉक कहते हैं। कभी-कभी मुद्रा स्टॉक को ही मुद्रा की पूर्ति मान लिया जाता है, किन्तु यह सही नहीं है, क्योंकि मुद्रा स्टॉक की तुलना में मुद्रा की पूर्ति अधिक होती है और देश की आर्थिक गतिविधियों में मुद्रा की पूर्ति का काफी प्रभाव पड़ता है। किसी निश्चित समयावधि में मुद्रा की पूर्ति, उसके कुल प्रवाह के बराबर होती है। यदि हम मुद्रा-स्टॉक को मुद्रा की औसत चलन गति से गुणा कर दें तो हम मुद्रा के प्रवाह को जान सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि मुद्रा का स्टॉक 100 करोड़ रुपए है तथा एक निश्चित समयावधि में उसका औसत चलन-वग 10 है तो मुद्रा की पूर्ति 1,000 करोड़ रुपया के बराबर होगी और यही मुद्रा का प्रवाह है। देश में मुद्रा के स्टॉक का नियन्त्रण केन्द्रीय बैंक के द्वारा किया जाता है, किन्तु उसके द्वारा मुद्रा के चलन-वेग

शक्तिशाली मुद्रा का निर्धारण

व्यापारिक बैंकों के पास रिजर्व की जो मात्रा होती है तथा लोगों के पास मुद्रा (नोटों की मात्रा सिक्के) की जो मात्रा होती है, उसके योग को ही **शक्तिशाली मुद्रा** कहते हैं। बैंकों में जमा राशि को यही उच्च शक्ति मुद्रा होती है अर्थात् यदि लोग बैंकों में अधिक राशि जमा करते हैं तो बैंक जमा बढ़ जाती है तथा इसी आधार पर बैंक अधिक साख का निर्माण करते हैं। अन्य शब्दों में कहा जा सकता कि साख निर्माण का आधार भी शक्तिशाली मुद्रा है। मौद्रिक आधार पर मुद्रा की पूर्ति में प्रत्यक्ष सम्बन्ध है अर्थात् शक्तिशाली मुद्रा में वृद्धि से मुद्रा की पूर्ति में भी वृद्धि होती है, किन्तु रिजर्व अनुपात की पूर्ति में विपरीत सम्बन्ध होता है अर्थात् रिजर्व अनुपात में वृद्धि होने पर मुद्रा की पूर्ति कम हो जाती

उच्च शक्ति मुद्रा का महत्व इस बात में निहित है कि यह (i) मौद्रिक नीति के निर्माण में (ii) राजकोषीय नीति का आधार, (iii) मौद्रिक विस्तार की दर का निर्धारक तथा (v) आर्थिक विकास आधार है।

शक्तिशाली मुद्रा का प्रयोग (Use of High Powered Money)

शक्तिशाली मुद्रा का प्रयोग, उसकी मांग में निहित है तथा शक्तिशाली मुद्रा की मांग तीन कारणों की जाती है जो निम्नलिखित हैं :

1. व्यापारिक बैंकों द्वारा शक्तिशाली मुद्रा की मांग देश के केन्द्रीय बैंक में अपनी वैधानिक सीमा निर्धारित रिजर्व को बनाए रखने के लिए की जाती है।

2. उपर्युक्त के साथ ही अतिरिक्त रिजर्व के लिए भी शक्तिशाली मुद्रा की मांग, व्यापारिक बैंकों की जाती है।

3. लोगों द्वारा नकद मुद्रा की मांग की जाती है।

उपर्युक्त तीन कारणों को सूत्र द्वारा व्यक्त किया जा सकता है :

$$H = C + RR + ER$$

जहां H = शक्तिशाली मुद्रा

C = जनता द्वारा नकद मुद्रा की मांग

RR = बैंकों द्वारा रिजर्व अनुपात के लिए मांग

ER = बैंकों द्वारा अतिरिक्त रिजर्व की मांग

बैंकों द्वारा रिजर्व की मांग (Banks Demand for Reserves)

एक व्यापारिक बैंक द्वारा रिजर्व की मांग, उसकी जमाओं पर निर्भर रहती है। बैंक सामान्यतः निर्धारित सीमा से अधिक मात्रा में रिजर्व रखते हैं और कानूनी सीमा से मात्रा में अग्रिम देते हैं ताकि वे अप्रत्याशित या आकस्मिक मुद्रा की मांग की पूर्ति कर सकें। इसीलिए बैंकों को अतिरिक्त मात्रा में रखने की आवश्यकता होती है। इस प्रकार मुद्रा-पूर्ति का निर्धारण व्यापारिक बैंकों के निर्धारित रिजर्व अनुपात और अतिरिक्त रिजर्व अनुपात के द्वारा होता है तथा ये दोनों अनुपात जमा की मात्रा पर निर्भर रहते हैं।

शक्तिशाली मुद्रा का तीसरा निर्धारक तत्व है लोगों द्वारा रखी जाने वाली नकद मुद्रा की मात्रा। सिक्कों एवं नोटों की मांग, बैंकों की जमा राशि के एक अंश में होती है। इसे हम निम्न सूत्र द्वारा व्यक्त कर सकते हैं:

$$Cr = C/D$$

जहां Cr = मुद्रा का मांग जमा अनुपात

C = चलन मुद्रा

D = बैंकों की मांग जमा राशि

मुद्रा अनुपात कई कारणों द्वारा प्रभावित होता है जैसे लोगों के आय स्तर में परिवर्तन, लोगों द्वारा साख मुद्रा प्रयोग तथा आर्थिक क्रियाओं की अनिश्चितता।

मुद्रा की पूर्ति तथा शक्तिशाली मुद्रा में सम्बन्ध (Relation between the Money Supply and High Powered Money)

जहाँ तक मुद्रा की पूर्ति का प्रश्न है, इसके निर्धारण में दो तत्वों का हाथ होता है, एक है व्यापारिक बैंकों की जमा राशि और दूसरा, लोगों द्वारा रखी जाने वाली मुद्रा (Currency) की मात्रा। इसे निम्न सूत्र द्वारा इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं :

$$M = D + C$$

जहाँ M = मुद्रा की मात्रा, D = बैंकों की मांग जमा राशि, एवं C = लोगों के पास मुद्रा की मात्रा।

जैसा हम पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं कि शक्तिशाली मुद्रा तीन तत्वों से निर्धारित होती है—लोगों द्वारा मुद्रा की मांग, बैंकों द्वारा रिजर्व अनुपात की मांग एवं बैंकों द्वारा अतिरिक्त रिजर्व की मांग। इसका सूत्र इस प्रकार है :

$$H = C + RR + ER$$

उपर्युक्त दोनों सूत्रों को दृष्टि में रखकर मुद्रा की पूर्ति एवं शक्तिशाली मुद्रा में सम्बन्ध निम्न प्रकार व्यक्त किया जा सकता है :

$$\frac{M}{H} = \frac{D + C}{C + RR + ER}$$

उक्त सूत्र में यदि हम हर (Denominator) और अंश (Numerator) को D से विभाजित करें तो निम्न सूत्र पाते हैं :

$$\frac{M}{H} = \frac{\frac{D}{D} + \frac{C}{D}}{\frac{C}{D} + \frac{RR}{D} + \frac{ER}{D}}$$

अथवा

$$\frac{M}{H} = \frac{1 + \frac{C}{D}}{\frac{C}{D} + \frac{RR}{D} + \frac{ER}{D}}$$

यदि हम $\frac{C}{D}$ को Cr से, $\frac{RR}{D}$ को RRr से तथा $\frac{ER}{D}$ को ERr से प्रतिस्थापित कर दें तो सूत्र का निम्न रूप होगा :

$$\frac{M}{H} = \frac{1 + Cr}{Cr + RRr + ERr}$$

उपर्युक्त सूत्र में Cr का अर्थ मुद्रा की मांग और जमा अनुपात से है, जिसे $\frac{C}{D}$ द्वारा व्यक्त किया गया है अर्थात् $\frac{C}{D}$ = Cr, RRr वैधानिक रिजर्व अनुपात है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर शक्तिशाली मुद्रा को निम्न सूत्र के द्वारा व्यक्त कर सकते हैं :

$$H = \frac{Cr + RRr + ERr}{1 + Cr} \times M$$

मुद्रा की पूर्ति को निम्न सूत्र द्वारा व्यक्त कर सकते हैं :

$$M = \frac{1 + Cr}{Cr + RRr + ERr} \times H$$

उक्त अन्तिम सूत्र में, **मुद्रा पूर्ति को, शक्तिशाली मुद्रा के फलन के रूप में परिभाषित किया गया है तथा मुद्रा पूर्ति की व्याख्या चार निर्धारक तत्वों के द्वारा की गई है**—H, Cr, RRr तथा ERr (**शक्तिशाली मुद्रा, मुद्रा का मांग जमा अनुपात, निर्धारित रिजर्व अनुपात तथा अतिरिक्त रिजर्व अनुपात**)। **उक्त सूत्र से यह भी ज्ञात होता है कि शक्तिशाली मुद्रा की पूर्ति जितनी अधिक होगी, मुद्रा की पूर्ति भी उतनी ही अधिक होगी। मुद्रा अनुपात** (Currency Ratio), **निर्धारित रिजर्व अनुपात तथा अतिरिक्त रिजर्व अनुपात जितना कम होता है, मुद्रा की पूर्ति उतनी ही अधिक होती है तथा इनके अधिक होने पर मुद्रा की पूर्ति कम होती है अर्थात् इनमें विपरीत सम्बन्ध होता है।**

समीकरण, $M = \frac{1 + Cr}{Cr + RRr + Er} \times H$ में राशि, $\frac{1 + Cr}{Cr + RRr + Er}$ **मुद्रा गुणक** (Money Multiplier) को व्यक्त करता है जिसे (m) द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।

$$\frac{M}{H} = (m)$$

इस तरह,

$$M = (m) \cdot H$$

अथवा

यह स्पष्ट करता है कि मुद्रा की पूर्ति (M), उच्च शक्ति मुद्रा (H) का फलन है।

मुद्रा गुणक (Money Multiplier)—मुद्रा गुणक से अभिप्राय उस संख्या से है जिससे उच्च शक्ति मुद्रा (या मौद्रिक आधार) में परिवर्तन होने पर मुद्रा की पूर्ति में कितने गुणा परिवर्तन होगा। मान लीजिए उच्च शक्ति मुद्रा में 10 करोड़ रुपए के परिवर्तन होने के कारण मुद्रा की पूर्ति में 30 करोड़ रुपए का परिवर्तन होता है तब मुद्रा गुणक 3 होगा।

मुद्रा की पूर्ति तथा उच्च शक्ति मुद्रा के बीच सम्बन्ध को निम्न चित्र द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है। चित्र में OX-अक्ष पर उच्च शक्ति मुद्रा की पूर्ति तथा OY-अक्ष पर उच्च शक्ति मुद्रा की मांग को व्यक्त किया गया है। HS उच्च शक्ति मुद्रा की पूर्ति रेखा है। यह OX के समानान्तर है, क्योंकि H का निर्धारण प्राधिकरण द्वारा निर्धारित नीति के अनुसार होता है। यह मुद्रा के सम्बन्ध में पूर्णतया बेलोच होता है। वक्र Hd मुद्रा पूर्ति के प्रत्येक स्तर से सम्बद्ध उच्च शक्ति मुद्रा की मांग को व्यक्त करता है। साथ ही $\frac{Cr + RRr + ERr}{1 + Cr}$ को भी दर्शाता है।

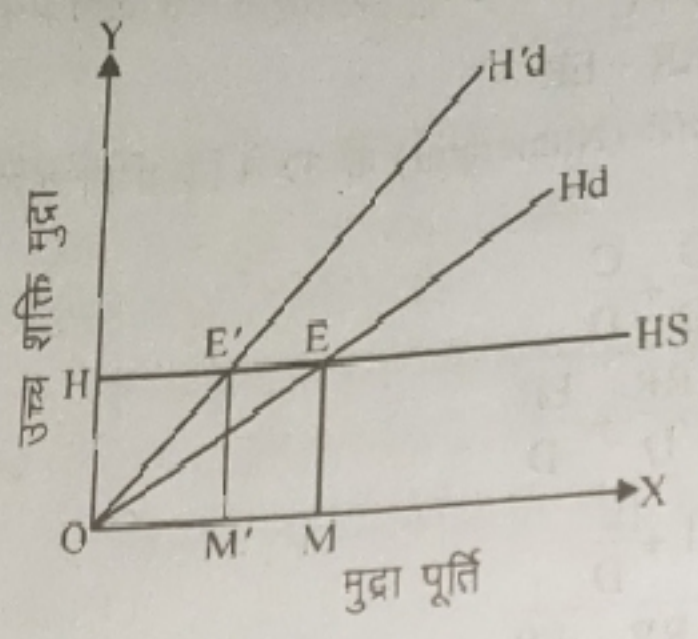

चित्र 1

Cr, RRr, ERr और उच्च शक्ति मुद्रा को दिया हुआ होने पर सन्तुलन की स्थिति में मुद्रापूर्ति OM होगी, क्योंकि Hd वक्र रेखा HS को बिन्दु E पर काटती है। इस तरह बिन्दु E सन्तुलन का बिन्दु हुआ। यदि Cr अथवा RRr अथवा ERr अनुपातों में से किसी भी अनुपात में वृद्धि हो जाती है तो उच्च शक्ति मुद्रा की मांग में वृद्धि हो जाएगी तथा H'd वक्र ऊपर उठकर Hd' का स्वरूप ग्रहण कर लेगा। इस तरह उच्च शक्ति मुद्रा में वृद्धि होने पर H की मांग बढ़ेगी और मुद्रा की पूर्ति घटकर OM' रह जाएगी। इसी तरह H की पूर्ति में कमी से मुद्रा की पूर्ति बढ़ जाएगी। स्पष्टतया, $M = (m) \cdot H$

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मुद्रा पूर्ति पर बहिर्जात और अन्तर्जात घटकों का प्रभाव पड़ता है जिन्हें सामान्यतया इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है :

न्यूनतम नकदी रिजर्व अनुपात, बैंक आरक्षितियों का स्तर जमाओं की सापेक्षता में करेन्सी धारण करने लोगों की इच्छा। अन्तिम दो निर्धारकों को मिलाकर उसे 'उच्च शक्ति मुद्रा' का नाम दिया गया है।

व्यापारिक बैंकों का व्यवहार

(BEHAVIOUR OF COMMERCIAL BANKS)

अर्थव्यवस्था में व्यापारिक बैंक एक उत्पादक फर्म की भांति कार्य करते हैं जिनका उद्देश्य अन्य फर्मों की ही भांति निवेश एवं ऋणदान क्रियाओं द्वारा अधिकतम लाभ प्राप्त करना होता है। अधिकतम लाभ प्राप्त फर्म के रूप में व्यापारिक बैंकों को अपने पास फालतू अथवा अतिरिक्त रिजर्व नहीं रखना चाहिए। अन्य शब्दों में व्यापारिक बैंकों के पास वास्तविक कैश रिजर्व (नकद कोष) उनके वैधानिक आवश्यक नकद कोष से अधिक नहीं होना चाहिए। दूसरे शब्दों में उनके अतिरिक्त (बेशी) रिजर्व की मांग शून्य होनी चाहिए, अर्थात्

$$ER = R - RR = 0$$

जहां ER = अतिरिक्त कैश रिजर्व (बेशी नकदी कोष),

R = नकद कोष, RR = आवश्यक वैधानिक कोष

परन्तु व्यवहार में व्यापारिक बैंक अपने पास कुछ अतिरिक्त कैश रिजर्व रखते हैं। ऐसी दशा में $ER > 0$ होती है। व्यापारिक बैंकों की यह धारणा अधिकतम लाभ प्राप्ति की शर्त के विपरीत है, परन्तु तर्क कि बैंकों को अपने पास अतिरिक्त नकदी नहीं रखनी चाहिए यह इस तथ्य की उपेक्षा करता है कि व्यापारिक बैंकों को भविष्य के बारे में पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं होता तथा उनकी सब सम्पत्तियों एवं ऋणों

समान तरलता, आय एवं जोखिम नहीं होती है। फलस्वरूप, परिसम्पत्तियों को प्राप्त करने का निर्णय लेते समय बैंक अपनी सम्पूर्ण अतिरिक्त नकदी का निवेश अधिकतम आय प्रदान करने वाली परिसम्पत्तियों में नहीं करेगा, क्योंकि ये परिसम्पत्तियां सबसे कम तरल और सबसे अधिक जोखिम वाली होती हैं। व्यापारिक बैंकों की अधिकांश निवेशित पूंजी इसके जमाकर्ताओं की जमाएं होती हैं, जिन्हें मांगने पर जमाकर्ताओं को वापस करना बैंक का दायित्व होता है। इस भुगतान दायित्व का कुशलतापूर्वक निर्वाह करने के लिए बैंक को अपने विभिन्न परिसम्पत्तियों में उपस्थित आय, तरलता एवं जोखिम का आकलन करने के उपरान्त अपने निवेश अथवा परिसम्पत्ति पत्राधान को बहुविध बनाना चाहिए। इस तथ्य के परिप्रेक्ष्य में बैंक के परिसम्पत्ति पत्राधान में अधिक आय प्रदान करने वाली, अधिक जोखिमयुक्त एवं गैर तरल परिसम्पत्तियों से लेकर शून्य आय प्रदान करने वाली पूर्णतया जोखिमरहित नकदी तथा विभिन्न प्रकार की परिसम्पत्तियां होंगी। बैंक को अपने जमाकर्ताओं को उनकी मांग पर भुगतान करने तथा विपरीत परिस्थितियों का सामना करने के लिए कुछ नकद परिसम्पत्ति अपने पास अवश्य संचित रखनी चाहिए, क्योंकि यदि बैंक अतिरिक्त नकदी नहीं रखता तथा किन्हीं कारणों से इसकी नकदी में कमी हो जाती है तब इसे कठिनाई के समय में अन्य व्यापारिक बैंकों अथवा केन्द्रीय बैंक से उधार लेना होगा जिसके लिए बैंक को ब्याज का भुगतान करना होगा। इससे इसकी लागतों में वृद्धि होगी तथा इसके कुल लाभ में कमी आ जाएगी। अधिकतम लाभ की प्राप्ति के लिए बैंक को अन्य परिसम्पत्तियों के साथ-साथ कुछ अतिरिक्त नकदी तथा कम ब्याज आय प्रदान करने वाली एवं कम जोखिम वाली तरल सरकारी हुंडियां जिन्हें आवश्यकता पड़ने पर तत्काल बिना अधिक लागत एवं हानि के नकदी में बदला जा सकता है, को भी अपने परिसम्पत्ति पत्राधान में रखना चाहिए। जैसे-जैसे परिसम्पत्ति पर प्राप्त होने वाली आय में नकद कोषों को प्राप्त करने की लागत की तुलना में वृद्धि होती जाती है वैसे-वैसे बैंक अपने परिसम्पत्ति पत्राधान वितरण के ढांचे में इस तरह यथोचित परिवर्तन करेगा कि इसमें कम तरल तथा अधिक आय प्रदान करने वाली परिसम्पत्तियों की राशि अधिक होती जाएगी। इसका तात्पर्य यह हुआ कि बैंक के नकद कोष अनुपात में कमी हो जाएगी तथा कुल उच्च शक्ति प्राप्त मुद्रा (H) एवं चलन मुद्रा का अनुपात स्थिर रहते हुए मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि हो जाएगी।

समीकरण (1) से

$$R = ER + RR \qquad ...(2)$$

या,

$$\frac{R}{D} = \frac{ER}{D} + \frac{RR}{D} \qquad ...(3)$$

या,

$$Rr = ERr + RRr \qquad ...(4)$$

उपर्युक्त समीकरण में Rr वास्तविक नकद कोष अनुपात, ERr अतिरिक्त रिजर्व (बेशी कोष) अनुपात तथा RRr आवश्यक अथवा वैधानिक नकद कोष अनुपात है।

हम जानते हैं,

$$M = \frac{H}{Cr + Rr - CrRr} \qquad ...(5)$$

समीकरण (5) में समीकरण (4) को प्रतिस्थापित करने पर,

$$M = \frac{H}{Cr + ERr + RRr - CrERr - CrRRr} \qquad ...(6)$$

चूंकि Cr तथा ERr दोनों का पृथक् आंकिकमूल्य एक से कम है अतः इनके गुणनफल Cr.ERr का मूल्य इन दोनों के पृथक् मूल्यों से कम होगा तथा परिणामस्वरूप मुद्रा की पूर्ति इन दोनों में से प्रत्येक केसाथ विपरीत रूप में सम्बन्धित होगी।

व्यापारिक बैंक की उपर्युक्त व्याख्या से इस तथ्य पर प्रकाश पड़ता है कि व्यापारिक बैंकों का अतिरिक्त रिजर्व अनुपात नकद कोषों को प्राप्त करने की लागत में कमी होने तथा परिसम्पत्तियों पर प्राप्त होने वाली आय में वृद्धि होने के साथ कम होगा। इसका तात्पर्य यह हुआ कि अन्य बातें—मुद्रा की पूर्ति के अन्य सभी निर्धारक, समान रहने पर मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि होगी। यहां यह इंगित करना उचित होगा कि नकद कोषों को प्राप्त करने की सापेक्ष लागत किस प्रकार निर्धारित होती है। व्यापारिक बैंकों के लिए इस लागत के दो प्रमुख निर्धारक ब्याज की बाजार दर (*r*) तथा केन्द्रीय बैंक की बैंक दर अथवा बट्टा दर (*b*) हैं। केन्द्रीय बैंक की बैंक दर के स्थिर रहते हुए यदि ब्याज की बाजार दर में वृद्धि हो जाती है तो व्यापारिक बैंकों के लिए